संक्षिप्त रामायण

प्रार्थना है , हे दयामय, राम इस पर ध्यान दो।   और कृपा करके हमें, नित भक्ति का वरदान दो॥

भक्त की रक्षा चतुर्भुज, सर्वदा करते रहे।   भक्तों के कारण प्रभु, अवतार भी धरतें रहें॥

भूमि जब अकुला गयी, दुष्टों के अत्याचार से ।   सांत्वना दी आपने, पृथ्वी को बहुत प्रकार से॥

आनकर दशरथ नृपति के घर, जन्म तुमने लिया ।   भूमि भार उतारकर के, धर्म स्थापित किया॥

और यज्ञ संपन्न कराया, तपोवन के बीच में।   वाण जाकर के लगे थे , आपके मारीच में॥

राक्षसि एक ताड़का नामक, जो थी सो मार दी।   नारी गौतम की अहिल्या, जो शिला थी तार दी॥

मान्य विश्वामित्र जो संसार में विख्यात थे।   यज्ञ मंडल में पधारे, राम लक्ष्मण साथ थे॥

भाट ने नृप प्राण कहा, जो शम्भु- धनुष उठाएगा।   जनक-प्रण अनुसार वो, श्री जानकी को ब्याहेगा॥

फिर नृपति उठ-उठ, सीना तान धनुष पर आने लगे।   और शिव के धनुष पर पुरुषार्थ आजमाने लगे॥

किन्तु धनुष कठोर था, ना कुछ भी उनका बस चला।   बहुत कुछ चाहा हिलाना, पर नहीं टाले टला॥

जनक बोले वीरहीन महि भयी अनुमान है।   जानकी क्वारी रहे भव तव्यता बलवान है॥

क्रुद्ध होकर लखन बोले, जहाँ सकल भूपाल थे।   रोष में संतृप्त थे और नेत्र भी विकराल थे॥

जनक का ऐसा वचन हमसे सहा जाता नहीं।   कौन भारी बात है ये समझ में आता नहीं ॥

क्या जरा सी बात जिस पर व्यर्थ आज झमेल है।   भंग करना शिव धनुष को, बचपने का खेल है ॥

लौट दूं बृहमाण्ड को, कहिये अभी तत्काल मैं।   आकाश को पाताल में, पाताल को आकाश में॥

चकित हो आश्चर्य माना, सकल सुर समाज ने ।   लखन रोके मान्य विश्वामित्र जी महाराज ने ॥

क्षत्रियों को वीरता का भाव होना चाहिए ।   सभ्यता का भी जरा बर्ताव होना चाहिए ॥

क्या कोई भी दोष दे सकता है जाती मात्र को ।   स्वयं समझते हैं जनक हर पात्र और कुपात्र को ॥

राम उठो तरकश उतरो बाँह से ।   भंग कर दो शिव धनुष को हर्ष और उत्साह से ॥

धन्य है राजा जनक का वो कठिन प्रण पालना ।   तोड़ कर शंकर धनुष तृण के सामान उछालना ॥

हे प्रभु फिर से अयोध्या में मची थी धूमधाम।   शुभ घड़ी शुभ लगन में युवराज पद पावेंगे राम ॥

राज्य का होना भला क्यों कर तुम्हें स्वीकार था । आपका भू भार हरने के लिए अवतार था ॥

हे प्रभु तत्काल तुमने ऐसी माया फेर दी । कैकेयी की सद्बुद्धि मंथरा ने फेर दी ॥

भाग्य की भव तव्यता कोई मिटा सकता नहीं । उस विधाता की गति का पार पा सकता नहीं ॥

बात ये ठहरी कि जिससे राक्षसों का नाश हो । राज्य को भोगें भरत और राम का वनवास हो ॥

आपके वनवास का दशरथ को भारी खेद था । क्या करें वो आपकी इच्छा का सारा भेद था ॥

आप जब वन को चले संग में चली सीता सती । और छोटे भ्रात जिनका नाम था लक्ष्मण यति ॥

मध्य में सीता, लखन पीछे, प्रथम रघुनाथ थे । ब्रह्म माया जीव मानों उस समय पर साथ थे॥

वन बसन धारण किये माथे पर गुथी केश की । बस रही अब तक द्रगण में छवि तपस्वी भेष की॥

देखिये महाराज तुमने तार केवट को दिया । जिसने सपरिवार चरण पखार चरणोदक पिया ॥

आप तो उतरे थे केवल जान्हवी के पार से । दास को तारा सहित परिवार, इस संसार से ॥

हो रही पुष्पन लता पृथ्वी जहाँ चह चहा रही । मधुर स्वर स्वच्छंद से बस आपका यश गा रही

पाँच वट वृक्षों में जो तुमने बनायीं थी कुटी। सब तरह आनन्द था उसमें न थी कोई त्रुटि ॥

फल यही निकला प्रथम बस आपके बनवास का । सूर्पणखा की लखन ने काट डाली नासिका ॥

एक दिन मारीच मृग बनकर के सुन्दर वर्ण का। जानकी के सामने आ गया कुरंग स्वर्ण का ॥

जानकी लुभा गयी और देखकर मन में हँसी । आप से बोली की ये मृग छाल मेरे मन में बसी ॥

आप तो जाने ही थे भव तव्यता के मर्म को । चल दिये लेने तभी उस स्वर्णमय मृग चर्म को ॥

शीघ्र जाओ तुम लखन बोली सिया अति क्रोध से। चल दिये लक्ष्मण सिया के अधिकतर अनुरोध से ॥

चल दिये लक्ष्मण एक रेखा खींची चाप से । जो कोई लांघे इसे हो भस्म जाये श्राप से ॥

इत दशानन साधु वेषी ने सिया से छल किया । जानकी को ले स्वयं अंग भरकर चल दिया ॥

जानकी रोने लगी हा नाथ मैं तुमसे छुटि । आप जब लौटे तो देखा शून्य थी आपकी कुटी ॥

ढूंढने को चल दिये हा प्राण प्यारी जानकी। वृक्ष बोलो तुमने देखि है कहीं पर जानकी ॥

था जटायु गिद्ध जिसकी आप ही से टेर थी । मर चुका था आपके बस दर्शनों की देर थी ॥

आप जब पहुँचे जटायु प्रेम से रोने लगा । आँसुओं से आपके दोनों चरण धोने लगा ॥

सब कथा दीनी सुना गिद्ध ने विस्तार से। युद्ध किना था मैंने पर दार चोर लवार से ॥

अग्नि रूपी बाण से हा मेरे पर दिने जला । फिर दशानन ले सिया आकाश मार्ग को चला॥

देखिये महाराज मैं तुच्छ पक्षी गिद्ध हूँ । तिस पर भी मैं बलहीन हूँ, अति तुच्छ हूँ अति वृद्ध हूँ ॥

गोद में तुमने लिया फिर नींद सुख की सो गया। आप ही का नाम ले प्रभु आप में लय हो गया ॥

फिर कछुक आगे बढ़े उस खोज के उद्योग में। थे अधिक जनकात्मा के शोक और वियोग में ॥

भिलनी शबरी के तुमने तरण तारण प्रभु । खा लिये थे बेर झूठे प्रेम के कारण प्रभु ॥

आपकी हे भक्त वत्सल भक्त ही से प्रीत है । भक्त का मानो कहा चाहे रीति के विपरीत है ॥

बाली वध करके प्रभु सुग्रीव को राजा किया । युवराज पद अंगद को देकर ज्ञान तारा को दिया ॥

फँस गया सुग्रीव राजा राजमद की बात में। फिर सजग किना लखन ने ताड़ना के साथ में॥

कर जोड़कर माँगी क्षमा सुग्रीव ने भगवान से। और देकर मुद्रिका सुधि को कहा हनुमान से ॥

चल दिये हनुमान जाकर चिन्ह सीता को दिया । फिर सकल उपवन उजाड़ा भस्म लंका को किया ॥

चालत चूड़ामणि लिया, जय बोलकर भगवान की। आपको आकर सुनाया कुशल हैं श्री जानकी ॥

आप बोले पुल बंधे जल्दी चढ़ाई के लिये। वानरों द्वारा शिला तब, सिंधु में तरने लगी ॥

श्राप वस शक्ति अधिक थी नील नल के हाथ में । कर दिया तैयार पुल बस दिन एक और रात में ॥

बलि - सुत युवराज अंगद दूत बनकर के चला। गाड़ दीना पग सभा में जो नहीं टाले टला ॥

वीर लक्ष्मण के हृदय में मेघनाद की शक्ति लगी । बहुत कुछ उद्योग किना पर नहीं मूर्छा जगी ॥

वैद्य एक सुषेन ने आकर बतायी औषधि । रात ही में द्रोण से संजीवनी आये यदि ॥

तो अवश्य पीते ही चैतन्य इनको प्राप्त हो । आप का सब शोक और संताप राम समाप्त हो ॥

आप बोले पवनसुत मार्ग में रुकना नहीं। शीघ्र लाना औषधि सूर्योदय होये नहीं ॥

दीप सम है लो संजीवनी की यही पहचान है । देख तेरे हाथ अब भ्राता लखन के प्राण हैं ॥

कालनेमि कपट वेषी को पवनसुत मारकर । ले चले संजीवनी सारा पहाड़ उखाड़कर ॥

राम इतनी देर में अत्यंत घबराने लगे। अधिक हाहाकार और पछाड़ भी खाने लगे ॥

हाय नारी के लिये मैंने गँवाया भ्रात को। किस तरह जाकर अवध में मुख दिखाऊँ मात को ॥

नृप मरे सीता हरि अब लखन भी चलने लगे । शोक रूपी अग्नि में प्रभु मोम सम जलने लगे ॥

रीछ वानर भालू कपि सब बहुत ही घबरा गये । औषधि लेकर हनुमान इतने में आ गये ॥

औषधि लेकर पिलायी वैद्य ने हनुमान से । हो गये जाग्रत लखन उठकर मिले श्री राम से ॥

भ्रात रावण का विभीषण राम का अति भक्त था । नीतिज्ञ था निपुण था और राम में अनुरक्त था ॥

उस समय उस नीच रावण का बड़ा अधिकार था । बल पराक्रम से नुधन था और अतुल परिवार था ॥

भ्रात था एक कुम्भकरण छः मास तक सोता रहे । माँस मदिरा भोग को उसके जमा होता रहे ॥

राम ने देखा की वानर दाल हमारा डर गया। वाण एक मारा वहीं तत्काल निस्चर मर गया ॥

मरकर घननाद लक्ष्मण ने पठाया स्वर्ग को । फिर हना हनुमान अंगद ने निशाचर वर्ग को ॥

काल से प्रेरित दशानन आ गया मैदान में। शम्भु बल से भी अतुल थी शक्ति बीस भुजान में॥

था प्रपंची युद्ध में माया विकट रचने लगा । और छल करके श्री रघुनाथ से बचने लगा ॥

एक दिन मूर्छित किया संग्राम में श्री राम को ।अंत वध करके पठाया राम ने निज धाम को ॥

हो गए निश्चित निकर, निश्चर निकर को मारकर। प्राप्त की पृथ्वी सुता पृथ्वी का भार उतारकर ॥